भारत निर्वाचन आयोग

निर्वाचन सदन, अशोक रोड, नई दिल्ली-110001

सं. ईसीआई/प्रे. नो/66/2015 दिनांकः- 15दिसंबर, 2015

प्रेस विज्ञप्ति

"राजनीति में धन के उपयोग तथा जन प्रतिनिधित्व पर इसके प्रभावों पर क्षेत्रीय सम्मेलन"- 15-16 दिसंबर, 2015, नई दिल्ली, भारत।

भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त डॉ. नसीम जैदी ने भारत अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र एवं निर्वाचन प्रबंधन संस्थान (आई आई आई डी ई एम) भारत निर्वाचन आयोग के प्रशिक्षण विभाग तथा अंतर्राष्ट्रीय आइडिया द्वारा 15-16 दिसंबर, 2015 को रॉयल प्लाजा होटल, नई दिल्ली में राजनीति में धन के उपयोग तथा जन प्रतिनिधित्व पर इसके प्रभावों पर आयोजित दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन में पणधारियों जैसे- राजनीतिक दलों नामतः भाजपा, आईएनसी, सीपीआई के प्रतिनिधियों, सिविल सोसाइटी संगठनों, दक्षिण एशिया के निर्वाचन प्रबंधन निकायों के प्रतिनिधियों, पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्तों, नामतः श्री नवीन चावला, डॉ. एस. वाई. कुरैशी, श्री वी. एस. सम्पत, श्री एच. एस. ब्रह्मा तथा अंतर्राष्ट्रीय आइडिया के महासचिव श्री वायब्स लिटरमि भाग ले रहे हैं।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त डॉ. नसीम जैदी, अंतर्राष्ट्रीय आइडिया के महासचिव श्री वायब्स लिटरमि, निर्वाचन आयुक्त श्री ए. के. ज्योति तथा श्री ओ. पी. रावत, पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त डॉ. एस. वाई. कुरैशी की उपस्थिति में "राजनीति में धन के प्रयोग तथा जन प्रतिनिधित्व पर इसके प्रभाव" पर क्षेत्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए।

भारत के माननीय मुख्य निर्वाचन आयुक्त डॉ. नसीम जैदी ने अपने उद्घाटन भाषण में चार मूलभूत आवश्यकताओं, नामतः दलों/अभ्यर्थियों द्वारा वित्तीय विवरणियों को दाखिल करने की आवश्यकता, प्राधिकारी द्वारा इसके सत्यापन, सूचना का प्रकटीकरण तथा इसे लागू करने पर प्रकाश डाला। डॉ. जैदी ने आयोग के पास उपलब्ध पूर्ण शक्तियों का प्रयोग करते हुए विधिक संरचना की कमी वाले क्षेत्रों में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों/विनियमों सहित भारत में अनुसरण की जाने वाले राजनैतिक वित्तीय विनियमों के संबंध में विस्तार से चर्चा की।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राजनीतिक वित्त के क्षेत्र में व्यापक पारदर्शिता लाने के लिए पारदर्शिता दिशा-निर्देश तथा निर्वाचन ट्रस्ट के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए। उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि सभी राजनीतिक दलों ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी पारदर्शिता दिशा-निर्देश के अनुपालन में भारत निर्वाचन आयोग में वार्षिक लेखा परिक्षित लेखा दाखिल किया है। डॉ. जैदी ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा की गई कुछ अन्य पहलों जैसे- राजनीतिक दलों के क्षमता विकास, नीतिपरक मतदान के लिए अभियान तथा ई-फाईल करने में सहायता के लिए निर्वाचन आयोग की रिटर्न प्रिपेयरर स्कीम के बारे में सूचित किया। डॉ. जैदी ने भारत द्वारा की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा साथ ही इस पर जोर दिया कि यह सबसे उपयुक्त समय है कि भारत निर्वाचन आयोग तथा विधि आयोग द्वारा निर्वाचन सुधारों पर की गई संस्तुतियों को आगे लाया जाए।उन्होंने उल्लेख किया कि राजनीतिक दलों सहित सभी पणधारियों को आगे आना चाहिए।

श्री येवेश लिटरमि, अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए के महानिदेशक एवं बैल्जियम के पूर्व प्रधानमंत्री ने अपने स्वागत भाषण में राजनीति पर धन के नकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला और इस विषय की सबसे कठिन चुनौतियों की चर्चा की तथा व्यावहारिक समाधानों के तौर पर ठोस उपायों का सुझाव दिया।

श्री लिटरमि ने राजनीति में धन पर अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए द्वारा आयोजित सम्मेलनों की श्रृंखला के बारे में प्रतिभागियों को बताया। सम्मेलनों की यह श्रृंखला दिसंबर, 2014 में पेरिस में शुरू हुई, फिर इसका आयोजन मई, 2015 में ब्राजील में और सितंबर, 2015 में मैक्सिको में हुआ। अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए 15 वर्षों से अधिक समय से इस मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित किए हुए है।

निर्वाचन अभियान की समग्र बढ़ती लागत एशिया में अत्यधिक दबावपूर्ण चुनौतियों के रूप में अभिचिह्नित हुई है। सार्वजनिक निधीयन के अभाव में इसकी (बढ़ती लागत) प्रतिकूलता और बढ़ जाती है और इसके परिणामस्वरूप असमान राजनीतिक सहभागिता होती है। दूसरे, पदस्थ दल द्वारा राज्ययी संसाधनों का दुरूपयोग करने का तथा धनकुबेर समर्थकों को फायदा पहुंचाने का जोखिम है। राजनीति में महिलाओं के लिए वित्तीय समर्थन भी सीमित है। राजनीति हित प्रेरित और भ्रष्ट हो गई है।

श्री संजय वी गथिया, विशेष प्रतिवेदक ने राजनैतिक वित्त विनियमन एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन पर 2015 एशियन अफ्रीकन प्रैक्टिशनर बैठक पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने विषय से संबंधित विभिन्न आयामों एवं निष्कर्षों की चर्चा की और उपाय सुझाए।

पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त एस. वाई. कुरैशी ने अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए द्वारा पेरिस, ब्राजील एवं मैक्सिको में आयोजित पिछले तीन सम्मेलनों के साथ-साथ नवंबर, 2014 में कांठमाडू में आयोजित फेमबोसा सम्मेलन में जिन विषयों पर विचार-विमर्श किया गया था, उनकी संक्षिप्त जानकारी दी। प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा करने के बाद डॉ. कुरैशी ने सुझाया कि विमर्श को आगे ले जाए जाने की जरूरत है ताकि भारत में निर्वाचन के राज्यीय निधीयन का तौर-तरीका बनाया जा सके और सहमति कायम की जा सके।

अगले सत्र की अध्यक्षता माननीय निर्वाचन आयुक्त, श्री एस. के. ज्योति द्वारा की गई। इस सत्र के वक्ताओं में डॉ. मेगनस ओगमन, वरिष्ठ सलाहकार, राजनैतिक वित्त, आई एफ ई एस, प्रोफेसर अरूण कुमार (सेवानिवृत्त) आर्थिक अध्ययन केन्द्र एवं, सामाजिक विज्ञान आयोजन विद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, माननीय दासो कुनजांग वागडी, पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त, भूटान और श्री नवीन चावला, भारत के पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त शामिल थे। इन वक्ताओं ने निर्वाचकीय राजनीति की लागत कम करने के तौर-तरीकों पर विचार किया।

वक्ताओं ने निर्वाचकीय राजनीति की बढ़ती लागत को उजागर किया और निर्वाचनों के निष्पक्ष एवं अप्रत्यक्ष सार्वजनिक निधीयन सहित सुझाए गए उपायों पर विचार किया।

दूसरे सत्र की सह-अध्यक्षता सुश्री लीना रिक्किला तमांग, क्षेत्रीय निदेशक, एशिया एवं प्रशांत अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए और एच. एस. ब्रह्मा, भारत के पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त द्वारा की गई और इस सत्र के वक्ताओं में श्री पी. के. दास, अपर सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, पूर्व महानिदेशक (निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण), भारत निर्वाचन आयोग; श्री अहमद बिलाल महमूद, प्रेसीडेंट, पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ लेजिस्लेटिव डेवलपमेंट एंड ट्रांसपेरेंसी, पाकिस्तान और श्री सेमूअल जोन्स, कार्यक्रम अधिकारी, अंतर्राष्ट्रीय आई डी ई ए शामिल थे। इन वक्ताओं ने पारदर्शिता की चुनौतियों, अपेक्षित उपायों तथा डिजीटल समाधानों के सहित निधीयन एवं व्यय की पारदर्शिता की अपेक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

श्री अयोधी प्रसाद यादव, स्थानापन्न मुख्य निर्वाचन आयुक्त, नेपाल और दक्षिण एशिया (फेमबोसा) में ईएमबी फोरम के अध्यक्ष ने एक सत्र की अध्यक्षता की जिसमें डॉ. एस. वाई. कुरैशी भारत के पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त और डॉ. ई. श्रीधरन, आकादमी निदेशक, यूनिवर्सिटी ऑफ पेनीसिल्वेनिया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी ऑफ इण्डिया ने राजनीति में धन के दुष्प्रभावों का मुकावला करने के लिए क्षेत्रीय प्रयासों पर विचार-विमर्श किया।

ह./-

धीरेन्द्र ओझा
(निदेशक)